आज की मुरली का सार--- **Date: 30-05-2014**

बाबा ने आज की मुरली में नीचे बताई चार बातों पर हमें पुरूषार्थ करने को कहा हैं.

1. अंतर्मुखी अवस्था बनाना.

2. सबसे ममत्व मिटाए एक की याद रखो.

3. बाबा को बड़े प्यार से याद करो.

4. ट्रष्टि हो रहो.

1. अंतर्मुखी अवस्था बनाना.

चिंतन - अंतर्मुखी अवस्था बनाने के लिए बाबा ने हमें कहा, पहले अपना धर तो संभालो. हमें अपनी दिव्य बुद्धि को युज कर मन और संस्कार को ही चेक करना हैं. चेक करो मेरा मन अभी भी व्यर्थ चिंतन, परचिंतन या परदर्शन में तो नहीं रहता. चेक करो की मेरे में क्या गुण और अवगुण हैं. अंतर्मुखी अवस्था जमाने के लिए एकाग्रता की शक्ति को हमारे में डेवलप करना आवश्यक हैं. एकाग्रता की शक्ति से ही हम अपनी शारीरिक कर्मेन्द्रिया और सूक्ष्म कर्मेन्द्रियो पर क़ाबू पा सकते हैं.

2. सबसे ममत्व मिटाए एक की याद रखो.

चिंतन - अब हमें पुराना शरीर, पुराने संबंध, पुराने साधन ओर पुरानी दुनिया से ममत्व निकाल देना हैं.

हम जीवात्माओं ने इस बेहद के ड्रामा में पार्ट बजाते, लास्ट 83 जन्मो से अन्य जीवात्माओं से ही सम्बन्ध रखे और इसके फल स्वरूप हम नीचे ही गिरते आये, अब हमें सबसे ममत्व निकाल, एक विदेही (जिसको अपना शरीर नहीं हैं) बाप से ही सर्व सम्बन्ध का अनुभव करना हैं. लेकिन विदेही बाप से सर्व सम्बन्ध का अनुभव हम तब कर पायेंगे जब हम अपने खुद के शरीर से भी मोह निकाल दे और स्वयं के सत्य स्वरूप, आत्मिक स्वरूप में रहने का अभ्यास करें और एक विदेही बाप से सर्व सम्बन्धों का रस ले.

3. बाबा को बड़े प्यार से याद करो.

चिंतन - बाबा को बड़े प्यार से याद करना हैं. में आशिक आत्मा, माशूक परमात्मा के लव में लवलीन हूं. ये रूहानी आत्मा-परमात्मा का मिलन, आत्माको हर कष्टों से मुक्त कर देता हैं. में शिव कि पार्वती हूं. जिसको मेंने जन्मो-जनम ढूंढा, वो मेरा आशिक अब मुझे मिल गया हैं. कितना सुंदर हैं. कितना मीठा हैं. कितना प्यारा हैं. कितना प्योर (पवित्र) हैं. में तो पत्थर थी, तुमने (रूहानी पारसनाथ) आ कर मुझे टंच किया ओर में पारस बन गयी. ओ मेरे रूहानी माशूक, में कितना न तेरा शुक्रिया करूँ, तुमने मुझे अपना लिया. अब तो मेरा यह हाल है, तेरे बिना एक सेकंड भी निकालनी मुश्किल हो गयी हैं.

4. ट्रस्टी हो रहो.

चिंतन - ट्रस्टी हो कर रहो. में आत्मा ट्रस्टी हूं, इस शरीर को चलाने की. अब तक मेंने, मेरे पास जो भी साधन, सम्पति या सम्बन्ध हैं इस शरीर के सुख के लिए युज किया. लेकिन अब मुझ आत्मा को इस शरीर, साधन या सम्पति को युज करते भी इसमें कोई भी आसक्ति नहीं रखनी हैं. अब मुझे, मेरा हर कर्तव्य ट्रस्टी हो कर निभाना हैं. किसी भी बात में मेरा-पन न आए. याद रहे बाबा ने मुझे ट्रस्टी बनाया हैं तो मुझे हर कर्तव्य निभाते हुए ट्रस्टी भाव रखना ही हैं.

ॐ शांति

Please provide your review/complains to Atmabhai on email a.brahmin.soul@gmail.com.